पाप

पाप क्या है?

गीता मे भी कहा गया है . 'जो हो चुका है, वो अच्छा है, जो हो रहा है वो भी अच्छा है और जो होगा वो भी अच्छा है' जब सब अच्छा ही है तो पाप क्या है?

मैं कहता हूँ इस दुनिया में पाप तो कुछ भी नही है। हाँ गलत कुछ चीजें हो सकती हैं। पाप और गलती में अन्तर है। पाप क्या है यदि इसकी व्याख्या की जाए तो मैं यही अनुभव करता हूँ कि मनुष्य उसी काम को पाप कहता है जो ईश्वर की नजर में ठीक नही है। जिसके लिए ईश्वर उसे दण्ड देगा, जिस कार्य को ईश्वर करने से मना करता है। पाप एक दैविय वस्तु है। जबकि गलती एक मानवीय वस्तु है। गलत कार्य वो है जो समाज की निगाह में गलत है। जिसके लिए समाज व उसका कानून दण्ड देता है या उसे न करने का निर्देश देता है।

कुछ चीजें गलत इंसान या समाज का एक वर्ग समझता है, लेकिन एक दूसरा वर्ग वही कार्य करता है। पहला वर्ग उसे बल या शक्ति से रोक नहीं पाता है तो दूसरे वर्ग को पाप का वास्ता देकर, पाप व ईश्वर के माध्यम से डरा कर उसे करने से रोकना चाहता है। वैसे तो मैं समझता हूँ कि पाप और गलती दोनों का निमार्ण इंसान द्वारा ही किया गया है। पाप के कानून का निमार्ण एक दुर्बल व्यक्ति या वर्ग द्वारा एक सशक्त व शक्तिशाली वर्ग को सुधारने के लिए किया गया, जबकि गलती के कानून का निमार्ण समाज के द्वारा या आपसी समझौते द्वारा लोगों को सुरक्षा व शान्ति प्रदान करने के लिए किया गया।

इस परिभाषा के अनुसार मैं समझता हूँ कि दुनिया में कुछ भी पाप नही है। क्योंकि किसी भी गलती के लिए ईश्वर हमें दण्ड देता ही नही है, क्योंकि जिसको हम कहते हैं, ये ईश्वर की नजर में गलत है, वो ईश्वर की नजर में गलत होता ही नही। ईश्वर की नजर में कुछ भी गलत नही है। उदाहरण के रुप में हम लें तो हम कहते हैं कि किसी की हत्या करना पाप है, या मांस खाना या किसी इज्जत लूटना इत्यादि पाप है। मैं इसलिये इन्हें पाप नही कहता क्योंकि ऐसा करने के लिए ईश्वर ने खुद ही इजाजत दे रखी है। आपने जानवरों को तो देखा होगा, वो तो किसी की भी हत्या कर देता है। मांस खाना तो कुछ जानवरों की मजबूरी ईश्वर ने बना दी है, तो या तो ये चीजें पाप नही है या पाप यदि है तो भगवान ने खुद इजाजत क्यों दी है? इसका मतलब भगवान भी पापी है। तो फिर भगवान इन कार्यो के लिए क्यों दण्ड देगा? तो जब ये चीजें उस जानवर के लिए पाप नही है, तो वही चीज इंसान के लिए क्यों पाप हैं?

कुछ लोग कहेगें कि इंसान और जानवर में फर्क नही है, तो ईश्वर की निगाह में तो हम सब समान ही है। ये तो मनुष्य अपने आप को जानवरों से अलग करता है। आज भी जानवरों से ज्यादा हत्याएं मनुष्य करता है फिर भी वो अपने आपको जानवरों से श्रेष्ठ समझता है। दुनिया का सबसे नीच प्राणी मनुष्य है, सबसे ज्यादा हत्याएं मनुष्य करता है। जानवरों को और अपने लोगों को भी मारने के जितने क्रूर तरीके मनुष्य ने अपनाए हैं, उतना तो किसी जानवर ने भी नही अपनाए। फिर भी वो अपने आप को सवर्श्रेष्ठ समझता है, सभी जानवरों के ऊपर समझता है और ईश्वर ने भी इसी दुष्ट मनुष्य को सबसे ज्यादा तरक्की दी। पशुओं को तो आपने देखा ही होगा वो किसी भी मादा को पकड़ कर सम्भोग कर लेता

है। ये तो नैचुरल है। जो नैचुरल है वो ईश्वरीय है। और जो चीजें हम बनाते हैं वो भौतिक है। जब मनुष्य अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था, या आदि मानव के रुप में था तब यही सब कार्य वो भी करता था, क्योंकि ऐसा करना उसकी मजबूरी थी। तो ये सब करना उस समय भी तो पाप होना चाहीये था। लेकिन उस समय तो मनुष्य को उतनी बुद्वि थी नही कि वो इस बात का निर्धारण कर सके कि क्या गलत है और क्या सही? तो उस समय उसे जो बुद्वि प्राप्त थी या इस समय जानवरों को जो बुद्वि प्राप्त है वो तो शुद्वत: ईश्वर द्वारा प्रदत्त बुद्वि है। तो जिस बुद्वि को ईश्वर ने शुद्वता से दिया उसके द्वारा वो ऐसे काम करवाता है जिसे हम पाप कहते हैं, तो जब ईश्वर ही ऐसे काम करने के लिए प्रेरित कर रहा हो तो वो इन कार्यो के लिए दण्ड कैसे दे सकता है? इसी आधार पर ये कहा जा सकता है कि दुनिया में कुछ भी करना पाप नही है। हाँ गलत अवश्य कह सकते हैं।

क्योंकि गलत चीजें व कार्य वह हैं जो मनुष्य ने एक दूसरे की स्वतंत्रता व सुरक्षा के लिए बनाई हैं। मनुष्य जिस कार्य को अपने साथ होना पसन्द नही करता वो कार्य यदि दूसरे के साथ होता है या किया जाता है या करता है तो वह गलत होगा। मांस खाना गलत कहा जा सकता है क्योंकि यदि ऐसा ही कृत्य मनुष्य के साथ करना हो तो वो इसकी इजाजत कभी नहीं देगा। वो तो मरने के बाद भी अपना मांस पुशओं को अर्पण नही करता। क्योंकि खुद वह इन दु:खों को नही भोग सकता या भोगना चाहता तो दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करने की इजाजत देना कहाँ तक सही है। इसी प्रकार किसी की इज्जत लूटते हैं तो हम उसकी स्वतंत्रता का हनन करते हैं, तो जब अन्य व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता का हनन होना अच्छा नहीं लगता तो दूसरे के साथ ऐसे व्यवहार को कोई भी व्यक्ति कैसे सही ठहरा सकता है? इसलिए ये कार्य गलत तो हो सकते हैं, जिनके लिए समाज में दण्ड की व्यवस्था है और होनी चाहिए, लेकिन ये चीजें पाप नहीं हो सकती है।

पाप तो लोगों को डराने का माध्यम है, इसका निमार्ण उस समय हुआ जब कानून और व्यवस्था नही थी, या ऐसे नियम प्रभावी थे जो सभी के सहअस्तित्व को तरजीह नही देते थे। तब धर्म बना। धर्म आज के नए कानून का ही प्राचीन रुप है। धर्म के रुप में शुरुआत हुई ईश्वरीय नियम से अलग होने की, ज्यादा से ज्यादा मनुष्यों के सहअस्तित्व को बनाए रखने की। इसी दिशा में हम आज भी आगे बढ़ रहे हैं, और अब सिर्फ मनुष्यों की नही सभी सजीवों को भी साथ लेकर चलने की बात हो रही है। कृष्ण, बुद्ध, ईसा मसीह, मुहम्मद साहब इत्यादि अनेकों धर्म प्रणेता इसलिए महान् कहे जा सकते है क्योंकि उन्होंने कमजोर लोगों के लिए कानून निमार्ण की शुरुआत की। वेद- पुराण, कुरान, बाईबिल, गीता व इसे बनाने वाले इसीलिए महान् हो सकते है कि उन्होने उस समय लोगों को दिशा निर्देश दिए जब कोई कानून नही था। दण्ड देने का सामर्थ्य लोगों में या किसी वर्ग विशेष में नही था, तो उसने ईश्वरीय डर के माध्यम से लोगों को गलत कार्य करने से रोकना चाहा, इसलिए पाप के कानून का निमार्ण हुआ। जिसके द्वारा उन्होने कमजोर व शक्तिशाली सभी के सहअस्तित्व की बात की। वास्तव में वो पहले लोग थे, जो ईश्वर के विरुद्ध गये, ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध गये और मानव परक नियमों का निर्माण किया, पर हम उन्हें ईश्वर या ईश्वर का ही दूत कहते हैं। उनकी सोच, उनके ये नियम धर्म के रुप में प्रचलित हुए और आज के नए कानून का आधार स्तम्भ है।

मांस खाना तो सेक्स करने से ज्यादा गलत है, लेकिन आप उसका पालन करते जा रहे हैं। आज के समय में समाज के बहुत बड़े हिस्से के द्वारा मांस खाया जाता है, कोई भी व्यक्ति या शासन इतने अधिक लोगों को दण्ड नहीं दे सकता। इसलिए वो पाप शब्द के माध्यम से ऐसे गलत कार्य को रोकने का प्रयास करता है। पाप से डराने का सबसे बड़ा फायदा ये होता है कि वह मनुष्य के स्वभाव में प्राकृतिक रुप से व स्थायी परिवर्तन ला देता है। उस व्यक्ति के विचारों में ही परिवर्तन कर देता है। इसलिए आज भी पाप के माध्यम से लोगों को डराने की आवश्यकता है। इसलिए पाप शब्द की प्रासंगिकता आज भी है।

- पुस्तक “स्टेप्स” से